भगत नामदेव - सबद १७
कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥
रागु टोडी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ७१८

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥
जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥
कांइ रे बकबादु लाइओ ॥
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥
मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥

सार: सच्ची समझ केवल बौद्धिक ज्ञान से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव से उत्पन्न होती है। कोई व्यक्ति सत्य के बारे में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से बात कर सकता है, फिर भी व्यवहार में ऐसा कोई गुण या प्रवृत्ति न रखे। किसी फल का स्वाद चखने और केवल पेड़ का वर्णन करने के बीच का अंतर, जीवित अनुभव और सैद्धांतिक ज्ञान के बीच की दूरी को दर्शाता है। यह बल देता है कि जब भाषा सच्ची समझ पर हावी हो जाती है तब वह कितनी आसानी से महज़ शोर बनकर रह जाती है। वास्तविक आत्म-ज्ञान भीतर से अनुभव किया जाना चाहिए, न कि केवल बाहर से व्यक्त किया जाना चाहिए। इसलिए, बुद्धिमानी इसके सार को केवल समझाने में नहीं बल्कि उसे अपने जीवन की व्याख्या में उतारने में है।

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥
कुछ लोग उसे नज़दीक और कुछ उसे दूर बताते हैं। यह उजागर करता है कि कैसे भ्रम, सर्वव्यापी शक्ति की एकीकृत वास्तविकता को विकृत कर सकता है और हमारी आंतरिक एकता को विभाजित दृष्टिकोणों में बदल देता है।

जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥
पानी की मछली खजूर के पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रही है। यह रूपक द्वैत के माध्यम से सत्य को प्राप्त करने की व्यर्थता और असंभवता का प्रतीक है, क्योंकि द्वैत हमारी अंतर्निहित एकता के बारे में कोई स्पष्टता प्रदान नहीं करता। (१)

कांइ रे बकबादु लाइओ ॥
तुम यह व्यर्थ और सतही बातचीत क्यों जारी रखे हुए हो। यह दर्शाता है कि केवल सिद्धांत पर आधारित चर्चाएँ, जिनमें वास्तविक जीवन का अनुभव न हो, कोई मूल्य प्रदान नहीं करतीं।

जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
जिन्होंने उस सर्वव्यापी परम-तत्व को पा लिया है, वह स्वयं को छिपा कर रखते हैं। यह उस आत्म-साक्षात्कार की ख़ामोशी को दर्शाता है जिसमें व्यक्ति अंतर्मुखी हो जाता है, उसे न तो स्वयं को साबित करने की आवश्यकता रहती है और न ही सामाजिक पहचान की कोई चाह। (१)(विराम)

पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥
कोई विद्वान बनकर आध्यात्मिक ग्रंथों की व्याख्या करता है। यह ऐसे ज्ञान को दर्शाता है जो केवल प्रदर्शन तक सीमित रहता है और जिसमें अंतरात्मा को बदलने वाली गहरी अंतर्दृष्टि का अभाव होता है।

मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥
लेकिन सीधे-सादे नामदेव कहते हैं कि उन्होंने सर्वव्यापी परम-सत्य को जान लिया है। यह संकेत करता है कि सरलता उस सत्य को छू सकती है जिसे केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं पा सकता, आडंबर-रहित सहज बोध, दिखावटी बौद्धिकता से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। (२)(१)

तत्त्व: भक्त नामदेव, मछली की कल्पना का उपयोग करते हैं जो खजूर के पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रही है ताकि व्यर्थ प्रयासों की निरर्थकता को उजागर किया जा सके। यह रूपक दर्शाता है कि

ज्ञान की जटिलता अक्सर उन बातों को समझने से चूक जाती है जिन्हें सरल और सहज चेतना आसानी से ग्रहण कर सकती है। सच्ची अंतर्दृष्टि बौद्धिक तर्क-वितर्क से नहीं बल्कि शांत आत्म-बोध और निष्ठा से प्राप्त होती है। जो लोग वास्तव में इस सार को समझ लेते हैं, उन्हें इसे सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं होती, उनकी विनम्रता ही उनके ज्ञान की बुद्धिमत्ता का प्रतिबिंब बन जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com